BHARATI INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & DEVELOPMENT (BIJMRD)

(Open Access Peer-Reviewed International journal)

DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/08.2024-85122126/BIJMRD/Vol -2 / 6/july/2024/A12

Available Online: www.bijmrd.com|BIJMRD Volume: 2| Issue: 6| July 2024| e-ISSN: 2584-1890

डॉ. नामवर सिंह का जीवन संघर्ष

Sweta Kumari

Research Scholar, Department of Hindi

RKDF University, Ranchi

सारांश --

नामवर सिंह का जन्म 1 मई 1927 को वाराणसी से तीस मील दूर एक छोटे से गाँव जीयनपुर में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उनके पूर्वज उनके पैतृक गांव जीयनपुर से तीन किमी दूर स्वाहां गांव से आये थे. जब गहरवार राजपूतों का यह परिवार जीयनपुर आया तो इस गाँव में अधिक परिवार नहीं थे। एक या दो घर राजपूतों के थे और शेष आबादी यादव, काहाय और ग्रेड आदि जातियों की थी। क्षेत्र की शुष्कता, नीरसता एवं पिछड़ेपन के कारण इस गाँव को ऊसर गाँव भी कहा जाता था। ऊसर जहां कुछ भी नहीं उगता लेकिन इस गांव का नाम जीवनपुर यानि जीवनपुर रखा गया। 'उशर नामक स्थान में उर्वरता पैदा करने के इरादे से किसी ने इस भुखमरी का नाम जीयनपुर रखा होगा। गांव में न तो सड़क थी और न ही स्कूल. गांव में आठ अहीर परिवार, तीन लोहार परिवार, दो गधेरी, एक कहार, एक बनिया, एक तेली और दो गोठ परिवार यहां के जीवन की धड़कन हैं। नाई, धोबी और ब्राह्मण अपने व्यवसाय के लिए दूसरे गाँवों से आते थे।

कीवर्ड -- नामवर सिंह, शांति सिंह, वाराणसी, जीयनपुर, परिवार, प्रारंभिक शिक्षा, साहित्यिक संस्कार।

1. परिचय --

नामवर सिंह के पिता नागर सिंह अपने गाँव के पहले मिडिल पास व्यक्ति थे। वह एक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक थे। माता बागेश्वरी देवी एक निपुण महिला थीं। उनका परिवार एक कृषक परिवार था। यहां ब्यास बीधा खेती होती थी जिसमें मुख्य रूप से धान और गेहूं की खेती होती थी। मनले भाई रामजी सिंह का जन्म 1932 में हुआ और सबसे छोटे भाई काशीनाथ सिंह का जन्म 1937 में हुआ। 1945 में नामवर सिंह की शादी बिहार के भभुआ उपमंडल के दुर्गावती स्टेशन के पास भचकिया गांव के नवाब सिंह की बेटी शांति सिंह से हुई। श्रीमती शांति सिंह गाँव की एक बहुत ही शिक्षित, सुंदर, हंसमुख भारतीय महिला हैं जो हमेशा अपना सिर झुकाए रखती हैं। 1948 में भेते विजय का जन्म हुआ जो अब बड़े हो चुके हैं और 1968 में इकलौती बेटी "समीक्षा" का जन्म हुआ।

डॉ. नामवर सिंह

2. विषयवस्तु –

नामवर सिंह की प्रारंभिक शिक्षा रॉय के बगल में स्थित आवाजापुर के सोकर प्राइमरी स्कूल में हुई। उनके पिता इसी स्कूल में शिक्षक थे. + सूर्योदय के तुरंत बाद, वह वर्णमाला की किताब, स्लेट और दोपहर का भोजन अपने बैग में रखकर आवाजपुर के लिए निकल जाता था, पढ़ाई करता था और सूर्यास्त के बाद घर लौटता था। 2 जब नामवर सिंह चौथी कक्षा में पहुंचे तो उनके पिता का स्थानांतरण माधोपुर स्कूल में हो गया। . घर से माधोपुर की दूरी तीन मील थी। उनके पिता ने उन्हें माधोपुर स्कूल में दाखिला दिला दिया और उन्होंने अपने पिता के साथ नामवर जी के यहां पढ़ाई की और पांचवी कक्षा तक की पढ़ाई कमालपुर से की. नामपर जी 1940 की मिडिल परीक्षा में फेल हो गये। इतिहास में असफलता मिली। जब मैं परीक्षा में उत्तर लिखने बैठा तो मैंने शिवाजी पर इतना लंबा लिखा कि दूसरे प्रश्न का आधा भाग ही लिख सका और बाकी प्रश्न छूट गए। असफल होना स्वाभाविक था. घटित। 1941 में पुनः मिडिल परीक्षा में बैठे और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।पिता की इच्छा थी कि नामवर जी प्रशिक्षित होकर प्राथमिक विद्यालय में मास्टर बनें, लेकिन कामता प्रसाद विद्यार्थी जी के आग्रह पर उनका दाखिला बनारस के हीपेट क्षत्रिय स्कूल में करा दिया गया। उन्होंने 1945 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। जून 47 में इंटरमीडिएट किया। जुलाई 1947 में उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में सीए प्रथम वर्ष में दाखिला लिया और सकट मोचन के सामने महेंद्र छात्रावास में रहने लगे। 1949 में उन्होंने ए परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसी वर्ष उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से एमए हिंदी में प्रवेश लिया। 1951 में प्रथम श्रेणी में एम.ए. पूरा किया। एम.ए. पूरा करने के बाद उन्हें विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में 100/- रुपये की शोध फ़ेलोशिप मिलने लगी। साथी की हैसियत से उन्होंने विशेष उपहार भी दिये। इस अवधि के दौरान, वह छात्रावासों और छात्रावासों में रहे। 1956 में उन्हें पृथ्वीराज की भाषा नामक शोध थीसिस पर पीएचडी की उपाधि मिली। नामवर जी के साहित्यिक संस्कार की शुरुआत बचपन में हेतमपुर के स्वतंत्रता सेनानी कामता प्रसाद विद्यार्थी के घर जाकर हुई। विद्यार्थी जी जमींदार थे और कांग्रेसी ये नागर सिंह उनके मित्र थे। वे अक्सर नामवर जी के साथ विद्यार्थी जी के यहाँ जाते थे। विद्यार्थी जी को उनके यहाँ 'सैनिक', दैनिक 'आज' और सस्ता साहित्य मण्डल की पुस्तकें मिलती थीं। नामवर जी को सैनिक में प्रकाशित कार्टून बहुत पसंद थे. विद्यार्थी जी के घर पर उनका परिचय नेहरू की 'मेरी कहानी', 'विश्व

इतिहास की झलक', गांधी की आत्मकथा सत्य प्रयोग और टॉल्स्टॉय की 'गॉड इन लव' से हुआ। जब वे टॉल्स्टॉय की 'गाइज़ कन्फेशन' का अनुवाद पढ़ते थे तो एक अजीब अपराध बोध से भर जाते थे और विद्यार्थीजी के घर जाकर या तो इन किताबों को पलटते थे या उनकी बड़ी बेटी सरोज के साथ खेलते थे। अवजापुर के साहित्यिक मंडल ने साहित्यिक सरकार के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहां एक छोटी सी लाइब्रेरी थी. जयचंद सिंह और श्यामनारायण गुप्त साहित्यिक अभिरुचि वाले मित्र थे। पारंपरिक काव्यात्मक संवेदना का वातावरण था। इस माहौल को बनाने वालों में ठाकर राज सिंह और सूबेदार सिंह भी थे और ठाकुर रामगति सिंह भी थे जो नामवर जी और मन ये नरमी की छुट्टियों में आवाजपुर आते थे. मित्रता का समागम भी होगा और हम लोग यहीं बैठ कर साहित्यिक आलोचना, रत्नाकर की शंका और कुछ जासु ऐयारी उपन्यास भी पढ़ेंगे। इस माहौल का प्रभाव परी की जीत को लेकर एक संघर्ष पर पड़ा।

बचपन में ही हेतमपुर के स्वाधीनता सेनानी कामता प्रसाद विद्यार्थी के घर आने-जाने से नामवर जी का साहित्यिक सरकार बनना शुरू हुआ। विद्यार्थी की जमीदार और कांग्रेसी थे। नामर सिंह उनके मित्र थे। वे नामवर जी को लेकर अक्सर विद्यार्थी जी के यहाँ जाया करते विद्यार्थी जी के यहाँ सैनिक, दैनिक 'आज और सस्ता साहित्य मण्डल की किताबे जाती थी । सैनिक में छपने वाले कार्टून नामवर जी को बहुत अच्छे लगते थे। विद्यार्थी जी के यहाँ ही नेहरू की 'मेरी कहानी', 'विश्व इतिहास की झलक' नाधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग और टालस्टाय की 'प्रेम मे भगवान' नामक किताबो से उनका परिचय हुआ टालस्टाय के गाईकन्फेशन का अनुवाद जब उन्होंने पढ़ा तो एक अजीब किस्म के पाप बोध से घिर बैठे विद्यार्थी जी के यहाँ जाकर या तो ये किताबें उलटते या उनकी बढी लड़की सरोज के साथ खेलते ।

साहित्यिक सस्कार के निर्माण मे आवाजापुर की साहित्यिक मण्डली ने महत्वपूर्ण भूमिका वहाँ एक छोटी सी लाइब्रेरी थी। जयचंद सिंह और श्यामनारायण गुप्त साहित्यिक रू यह माहौल बनाने वालो में ठाकुर निभाई के दोस्त थे। रीतिकालीन काव्य सवेदना का माहौल था । बलराज सिंह और सूबेदार सिंह तो थे ही, ठाकुर रामगति सिंह भी थे जो सवैया और पनराशि लिखते गाते थे। गर्मी की छुट्टियों में नामवर जी आवाजापुर आ जाते। दोस्तों

का सग भी होता और लाइब्रेरी मे बैठकर उपलब्ध किताबें भी पढ़ते। साहित्यालोचन, रत्नाकर का उद्धव शतक और कुछ जासूसी ऐयारी उपन्यास यही से लेकर पढ़ा।

इस माहौल का असर हुआ कि छह में पहुंचते-पहुंचते नामवर जी ने इंग्लैंड पर हिटलर की विजय को लेकर एक कविता लिखी। उपनाम रखा 'पुनी'। नामवर सिंह पुनीत की उस

"पहली कविता की अतिपत्ति है

चीतानिया पर हिटलर 'पुनीत ऐसे

जैसे परत दि ".

छोटे से कब 'पुनीत' ने यह कविता सकिल टूर्नामेंट मे सुनाई और पुरस्कृत हुए। कविता लिखने का अभ्यास तेजी से आगे बढ़ा दर्जा सात मे 'वीर गाया की इस सदना ने 'रीतिकालीन मानसिकता का भी स्पर्श किया। कवि पुनीत मे लिखा—

जसमा प्रिय मिलन बनधि की है

चमने उरोज रहे कचुकी नसकि नसकि

मिडिल स्कूल के हेड मास्टर प० राम अधार मिश्र ने नामवर जी की कापी पर यह कविता देख ली। सीधे पूछा कचकी का क्या मतलब ? फिर नाराज होते हुए बो हूँ अब तुम्हारी शादी नागर सिंह से कहता वादी कर दे। लेकिन हेड मास्टर साहब का कोप तब शात हो गया जब डिप्टी साहब के स्वागत मे कवि 'पुनीत' ने एक कविता लिख दी। मिश्र जी ने सम्भवत उनके पिता को नागवर जी के रुवि हो जाने की सूचना दे दी पिता चितित हुए। उन्होंने बेटे को बाहरी किताबें पढने पर पाबन्दी लगा दी। कवि 'पुनीत' अब छिपकर माहरी साहित्य पढ़ते और जमकर कविता लिखते। बनारस से ही एक पत्रिका निकलती थी क्षत्रिय मित्र सरस्वती प्रसाद सिंह उसके सम्पादक ये आने चलकर डा० शम्भुनाथ सिंह और त्रिलोचन शास्त्री भी इसके सम्पादक हुए पत्र मे 1941 में नागबर जी की पहली खड़ी बोली की कविता छपी 'दीवाली'। दूसरी कविता मी 'सुमन रो मत, छेड नाना इसी साल चिन जी से परिचय हुआ।

उन्होंने पहले परिचय में ही अधिक से अधिक पढने की कोर प्रेरित किया। उनकी प्रेरणा से दो किताब खरीदी और गम्भीरता से पट्टी एक थी गोर्की की आवारा की टापरी । अनुवाद इलाचन्द्र जोशी का था। दूसरी किताब थी निराला को अनामिका | फिर चिनी रो नियमित गुलाल और उनकी बातन्त्रीत का सिलसिला शुरू हुआ I1942 को जुलाई में विलोचन जो स्कूल में भाषण करने आए। उन्होंने अपना कोई यात्रा स्मरण सुनामा सा नामवर जो सभा में बालक से कुछ सुनाए

ताग के सोता रहा जेल चादर

सखीच जगा गया कोई

प्रिसिपल ने पी सिंह को कविता बन्द था और स्कूल भर से मानवर भी के रूप में पहचाने जाने ने डीबेट कमिय स्कुल यूपी को भी हावा । यहाँ एक साहित्यिक रुचि के हिन्दी अध्यापक थे, मार्कण्डेय सिंह ये काशी प्रविधीस लेखक सभ के उभी थे। अमृत राय का भी इस कालेज में जाना था। ये मामवादी विचारधारा के बारे में क्लास लेते थे। नामवर जी भी उसमे गमिया होते आगे चलकर अमृत राय ने उन्हें खोकयुद्ध का ग्राहक बनाया। इन्हीं दिनो कालेन मैकनीन में नामवर जी की मुक्त छद की पहली कविता छपी नभ में पान' प्रगति का संदेश आया समस्यापूर्ति भी प .1943 में किसी समय प० नन्ददुलारे वाजपेयी का जाये और उन्होंने 'कामायनी' पर लम्बा व्याख्यान देते हुए उसे मध्यवर्गीय जीवन का महाकाव्य मताया 43 से ति प्रगतिशील लेखक स्वप से नामवर के सम्बन्ध बने नामवर जी की नोवी दायी के दिनों में तोचन का नियमित होस्टल आना, साहित्यिक बातचीत करना और मेस मे भोजन करके लौटना लगातार जारी मा 44 मे शालीनी तार सप्तक लेकर होस्टल आये कविताए दिखाई सुनाई और समझार्द भी । 1945 में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रथम वर्षान हुए। प्रसाद परिषद के किसी कार्यक्रम में में शांति निकेतन से बनारस आये थे। कार्यक्रम नागरी प्रचारिणी सभा में हुआ था। प्रसाद परिषद के अध्यक्ष ये वा सम्पूर्णानन्द । कार्यक्रम समाप्त होने के बाद जब द्विवेदी जी शांति निकेतन लौटने खगे तो नामवर जी उन्हें स्टेशन पर छोड़ने आये। अपर इंडिया एक्सप्रेस खुलते ही वाली भी।

काशीनाथ सिंह और दूधनाथ सिंह के साथ नामवर जी

3. निष्कर्ष —

विश्वविद्यालय से एक साल की छुट्टी लेकर यह किताब लिखी गई। 1985 में प्रतिशील लेखक संघ की स्वर्ण जयती के सिलसिले मे लदन गये । नेपाल की भी यात्रा की। इसी साल 11वी 12वी के लिए एन सी ई आर टी की कुछ और किताबों का संपादन किया- काव्य सचयन भाग 1-2, अभिनव काव्य भारती 1-2, अभिनव गद्य भारती 1-2, गद्य सक्यन भाग 1-2 हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, साहित्य का स्वरूप सर से उठ गया। 1 इसी वर्ष 11फर0 को पिता का साया

1986 में रवीन्द्रनाथ की 125वी जयन्ती पर फिर मास्को नये । इसी साल नागार्जुन की प्रतिनिधि रचनाओं का सम्पादन किया जो राजकमल से छपों एक मई 1967 को जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केन्द्र से रिटायर हो गये पुन इसी विभाग मे तीन साल के लिए नियुक्त हुए। 1987 में ही मलयज की किताब

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का सम्पादन किया । इसी साल दिसम्बर में भारत में सोवियत महोत्सव पर राजकमल ने चार किताबो का एक सेट प्रकाशित किया। इसी साल दिसम्बर में भारत में सोवियत महोत्सव पर राजकमल ने चार किताबो का एक सेट प्रकाशित किया जिसमे से संपादक है नामवर सिंह । पुस्तकों के नाम है धरती की सुन्दरता पीकर (रसूल हम्णातीर) आएँगे दिन कविताओं के (मारीना त्तवेतावेन, अनु बरेयाम सिंह) और बागानोंय की व्यथा और अन्य कहानियाँ (बसौली शूविशन) ।जियनपुर के नामवर जी की साल दर साल जिंदगी का यह खाका अधूरा ही है। उनकी लम्बी जिंदगी की घटनाओं का जो इसे और भी महत्पूर्ण बनाएगा ।

Rajnath Singh felicitates Prof. Namvar Singh - *Times of India*

संदर्भ --

- नामवर सिंह; कहानीः नयी कहानी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद; 1989; पृ. 19
- [15] नामवर सिंह; कहानीः नयी कहानी; लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद; 1989; पृ. 20

- सं. समीक्षा ठाकुर; कहना न होगा; वाणी प्रकाशन, दिल्ली 456-647 पृ.-28
- मैनेजर पाण्डेय: आलोचना की सामाजिकता; वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2005; पृ. - 69
- नामवर सिंह; इतिहास और आलोचना; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; 1986; पृ. 18
- अरविन्द त्रिपाठी; आलोचना की साखी; किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 2000; पृ.- 43
- नामवर सिंह कहानीः नयी कहानी; लोकभारती nal Jou प्रकाशन, इलाहाबाद, 1989; पृ. 25

Citation: **Kumari. S.,** (2024) "डॉ. नामवर सिंह का जीवन संघर्ष", *Bharati International Journal of Multidisciplinary Research & Development (BIJMRD)*, Vol-2, Issue-6, July-2024.